OM 19 a_Page 1 and 2 14/01/2015 09:46 Page 8

ग्वालियर। व्यवसायियों के लिए आयोजित 'स्ट्रेस फ्री प्रोफेशनल एक्सीलेंस' कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए ब्र.कु. गीता,माउण्ट आबू, ब्र.कु. राधा, ब्र.कु. रुक्मणि, ब्र.कु. सुधा, ब्र.कु. चेतना, ब्र.कु. गुरचरण, विष्णु गर्ग,एम.पी. प्रेसीडेंट,चेम्बर ऑफ कॉमर्स तथा पिताम्बर लोकवानी,व्यवसायी।

इन्दौर। यातायात एवं परिवहन प्रभाग द्वारा सड़क दुर्घटना में पीड़ितों की स्मृति में आयोजित कार्यक्रम में सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. हेमलता। मंच पर बस ऑपरेटर एसोसिएशन के सचिव अनिल भावसार, यातायात डी.एस.पी. विक्रमसिंह रघुवंशी, प्रदीपसिंह चौहान, एडिशनल एस.पी. अंजना तिवारी, आर. रक्षित तथा ब्र.कु. अनिता।

जबलपुर-कटंगा कॉलोनी। साइंटिस्ट एंड इंजीनियर्स प्रभाग द्वारा 'री डिस्कवरिंग लाइफ' विषयक कार्यक्रम में सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. ओमप्रकाश। मंचासीन हैं जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्व विद्यालय के कुलपति डॉ. वी.एस. तोमर, म.प्र. पावर ट्रांसमिशन कम्पनी लि. के मैनेजिंग डायरेक्टर उमेश राउत, ब्र.कु. मोहन सिंघल, ब्र.कु. आशा, ब्र.कु. विमला तथा अन्य।

नांगल डैम। नीरू अबरोल,सी. एंड एम.डी.,नेशनल फर्टिलाइज़र्स लि. को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. रीमा। साथ हैं श्रीमान व श्रीमती के.के. चतुर्वेदी,जी.जी.एम.,एन.एफ.एल.,नांगल यूनिट, ब्र.कु. विवेक, ब्र.कु. नीतू तथा अन्य।

पनवेल। महाराष्ट्र भूषण राज्य दण्ड प्राप्त प्रथम सन्यासिनी परमहंस सतगुरु श्री वीणा भारती महाराज को ओमशान्ति मीडिया देते हुए ब्र.कु. तारा।

सासाराम-बिहार। स्वच्छ भारत अभियान का दीप प्रज्वलन कर उद्घाटन करने के पश्चात् परमात्म स्मृति में एस.डी.ओ. नालिन कुमार, डी.एस.पी. अलख निरंजन चौधरी, कांग्रेस कमेटी अध्यक्ष शिव नारायण यादव, ब्र.कु. बबिता, ब्र.कु. सुनीता तथा अन्य।

आत्म-जागृति से होते हैं चमत्कार

महावीर स्वामी जहाँ जंगलों में तपस्या करने के लिए बैठते थे। उनकी प्रभा चारो ओर इतनी फैलती थी कि उस प्रभा के अंदर कोई हिंसक प्राणी भी आ जाता तो वो भी अपनी हिंसक वृत्ति को छोड़कर अहिंसक हो जाता था। हमने मदर टेरेसा, आदरणीय प्रकाशमणि दादीजी, पिताश्री ब्रह्मा बाबा को देखा। पिताश्री ब्रह्माबाबा के जीवन कहानी से वह प्रसंग, जब उन्हें मारने के लिए कई लोगों ने एक षड्यंत्र रचा। जो ऐसी बातों का प्रचार कर रहा है। उसको खत्म कर दो और उसके लिए उन्होंने ऐसे व्यक्ति को नियुक्त किया जो एक नामी गुण्डा था, हत्यारा था। जब वो मारने के लिए आया तो पिताश्री ब्रह्माबाबा ने उसको बहुत प्यार से सत्कार कर के उसको स्थान दिया। उसने मौका देखकर उनको मारने के लिए हथियार निकाला तो उसे वहाँ पर अपने इष्टदेव का साक्षात्कार हुआ। इष्ट का साक्षात्कार होते ही उसकी मनोवृत्ति में परिवर्तन आ गया। उसके मन में यही भावना आई कि इनको हम मार नहीं सकते। इसी तरह, एक बार पिताश्री माउण्ट आबू की पहाड़ियों में तपस्या करने के लिए बैठे थे। एक बहुत ही ज़हरीला साँप आकर के पिताश्री के पैर में लिपट गया। जैसे ही लोगों ने देखा कि अरे ये तो साँप है। पिताश्री जी ने इशारा किया कि ये कुछ नहीं करेगा। इसमें भी एक आत्मा है। ये आत्मा कभी भी वार नहीं करती, जब तक उनको कोई खतरा महसूस न हो। जैसे ही ये कहा और इतनी स्नेह की दृष्टि उस साँप के ऊपर डाली, तो वह सहज रीति से पैर छोड़कर जंगलों में वापिस चला गया।

भावार्थ यह कि इन महान आत्माओं के जीवन में जिसको आज हम चमत्कार कहते हैं, ये चमत्कार नहीं होते हैं, लेकिन ये उनकी चार्ज बैट्री का प्रभाव होता है। वो भी थे तो इसी दुनिया के इंसान और आज हम भी इसी दुनिया के इंसान हैं। अगर वो अपनी आत्मा की बैट्री को चार्ज करें तो ऐसे चमत्कारी प्रभाव दिखा सकते हैं, अर्थात् यदि वे परिस्थिति के ऊपर अपना अधिकार प्राप्त कर सकते हैं तो क्या हम नहीं कर सकते? यही स्वधर्म की शक्ति को जागृत करने की आवश्यकता है और नित्य हर कर्म में जागृति बनी रहे। एक बहुत सुंदर कहानी है, एक गुरु थे और उनका एक शिष्य था। गुरु के मन में ये भावना आयी कि मैं कुछ समय के लिए हिमालय पर जाकर गहन तपस्या करूं। उसने अपने शिष्य को बुलाकर कहा कि मैं हिमालय पर जाकर गहन तपस्या करना चाहता हूँ। मैं समझता हूँ कि जब तक मैं जाऊं तब तक आश्रम की सम्भाल तुम करो और उसका ध्यान रखना। गुरुजी ने कहा कि मैं परसो सुबह-सुबह निकल जाऊंगा, कल का दिन है, फिर भी अगर तुम कुछ पूछना चाहो तो पूछ सकते हो लेकिन ये ध्यान रहे कि कल का दिन मेरा मौन का है। फिर भी यदि तुम कुछ पूछना चाहो तो लिखकर पूछ सकते हो मैं जवाब दूँगा। गुरुजी अपने मौन की अवस्था में थे। दूसरे दिन सुबह जब शिष्य जागा और जैसे ही अपने नित्य कर्म को पूर्ण किया तो उसके मन में एक विचार आया कि कम-से-कम गुरुजी से मैं इतना तो पूछ लूँ कि उनके पीछे आश्रम चलाने में, मुझे कौन सी बातों का ख्याल रखना चाहिए। जिससे मुझसे कहीं गड़बड़ न हो। वो गुरुजी के पास जाता है और गुरुजी से पूछता है। गुरुजी आप मुझे ये बता सकते हो कि मुझे आपके पीछे से कौन सी बातों का ध्यान रखना चाहिए। तो गुरुजी ने एक कागज़ और कलम लिया और उस पर एक शब्द लिखा 'जागृति'। शिष्य ने जब पढ़ा 'जागृति' बस इतनी सी बात। ये सोच कर के वो खुश हो गया कि चलो ये तो बहुत सहज बात है सिर्फ जागृति रखनी होगी। जैसे ही वह बाहर निकला तो वो बार-बार कागज़ को देखता रहा। उसके मन में फिर प्रश्न उठा कि गुरुजी ने एक ही शब्द लिखा, उसके आगे पीछे कुछ लिखा ही नहीं। वो फिर गुरुजी के पास जाता है और पूछता है कि कुछ आगे-पीछे लिखकर दो, आप उसकी व्याख्या कीजिए। गुरुजी ने फिर वो कागज़ लिया, एक शब्द आगे लिखा और एक शब्द पीछे लिखा। वो दोनों शब्द थे 'जागृति'। जागृति.... जागृति....जागृति। शिष्य को जब वो कागज़ मिला, फिर उसने पढ़ा बस जागृति इतनी सी बात है। ये तो मैं कर सकता हूँ । ये तो कोई बड़ी बात नहीं है। खुश होकर के बाहर निकला। बार-बार वो शब्दों को देखता रहा जागृति...जागृति...जागृति... लेकिन उसकी बुद्धि आध्यात्मिकता में इतनी विकसित नहीं हुई थी। फिर उसके मन में प्रश्न आया कि जागृति....जागृति...जागृति... माना क्या? वो परेशान हो गया। फिर गुरुजी के पास जाता है और पूछता है कि गुरुजी जागृति...जागृति....जागृति... का मतलब क्या? गुरुजी ने फिर वो कागज़ लिया और फिर एक शब्द और जोड़ दिया जागृति। जागृति...जागृति...जागृति...जागृति = जागृति।

सदा शक्तियों .... पेज 6 का शेष

गये। हमारी समझ में कुछ नहीं आया। हमने बाबा को लिटाया, इतने में ही डाक्टर आ गया और उसने चेक करके कहा कि बाबा अब नहीं रहे.....परन्तु मुझे ये आभास नहीं हुआ था कि बाबा चला गया। मैं यही कह रही थी कि बाबा है....सबका प्यारा बाबा है... बाबा सदा साथ रहेगा। बाबा ने मुझमें अथाह शक्ति भर दी थी। मैं सब जगह फोन कर रही थी। मैं कहती थी– ड्रामा की भावी, ड्रामा याद है, बाबा अव्यक्त हो गये। जो भी आना चाहे भले पधारे। कोई भी आँसू न बहाये, बाबा तो अभी भी हमारे साथ है। बाबा ने हाथ में हाथ देकर मेरी हिम्मत बढ़ा दी थी। मैं अडोल थी। मुझे यह संकल्प मात्र भी नहीं आ रहा था कि ''क्या हो गया'' या ''अब क्या होगा।'' मेरी दिल भी नहीं भरी, मेरे नयन भी नहीं भरे थे। मुझे पूर्ण विश्वास था कि हमारी पढ़ाई तो अन्त तक चलती रहेगी। अव्यक्त बाबा का प्रथम बार सन्देशी के तन में आना हुआ। बाबा ने दीदी दादी को यज्ञ की पूर्ण ज़िम्मेदारी दी। बाबा ने हम दोनों के सिर पर कलश रखा। अव्यक्त बाबा ने सन्देश दिया था—''बच्चे फिक्र न करो, बाबा तुम बच्चों के लिए वतन में तैयारी करने गया है। मेरा प्यारा बच्चा मेरे पास है। बाबा ने स्वयं को गुप्त कर शक्तियों को प्रत्यक्ष करने के लिए ये पार्ट बजाया है। ये बोल मेरे कानों में गूँजते रहते थे।'' इस प्रकार यज्ञ रूपी जहाज में अनेक वत्सों को बैठाकर 33 वर्षों से जहाज को अनेक तूफानों और विघ्नों के बीच सुरक्षित रखकर, जो नाविक असीम साहस के साथ, अडोलता पूर्वक चला आ रहा था, अब वह हमारे हाथों में जहाज की बागडोर देकर, हमारा पूर्ण सहयोगी बनने के लिये उड़कर वतन में जा बैठा ताकि सभी बच्चे अपना अधिकार लेकर ही जाएं।अपनी पवित्रता की स्थिति के बारे में तो यही कहूँगी कि जैसे शुरू से ही बाबा ने मुझे सम्पूर्ण पवित्रता का वरदान दे दिया है। मुझे अपना जीवन पूर्णतया वरदानी लगता है।

निंदा करने... पेज 12 का शेष ...

जा रहे प्रयासों में ब्रह्माकुमारीज़ संस्था भरपूर योगदान डालेगी। मुख्य अतिथि निरमाग्रुप के अध्यक्ष करसन भाई पटेल ने कहा कि धन और शक्ति से प्राप्त होने वाला सुख कभी स्थायी नहीं हो सकता। सच्ची सुख-शांति प्राप्त करने के लिए आत्मा को जानना और उस पर लगे अज्ञान के आवरण को हटाना ज़रूरी है। 'अदानी फाउंडेशन' की मैनेजिंग ट्रस्टी प्रीति अदानी ने कहा कि पिछले 78 वर्षों से ब्रह्माकुमारीज़ संस्था सुख-शांतिमय समाज के निर्माण की अलख अनवरत रूप से जगा रही है। वे मानव के भटकते मन को सुमन बनाने का कार्य बखूबी कर रही है। आत्मा की सत्य पहचान की खोज करके सकारात्मक परिवर्तन लाया जा सकता है। वर्तमान संचार क्रांति के माध्यम से सब कुछ जानने का दावा करने वाला मनुष्य अपनी असली पहचान भूले बैठा है। देश और दुनिया की यात्रा के साथ अंतरमन की यात्रा भी करनी चाहिए। बच्चों को बौद्धिक कौशल की नहीं, बल्कि आध्यात्मिक कौशल की अधिक आवश्यकता है। आध्यात्मिकता के अभाव के कारण बच्चों का सम्पूर्ण विकास अवरुद्ध होता है। विश्व नवनिर्माण के लिए ब्रह्माकुमारीज़ का प्रयास उत्तम माना जाएगा। संस्था के महासचिव ब्र.कु.निर्वैर व गुजरात जोन निदेशिका ब्र.कु.सरला ने भी उपस्थिति को संबोधित किया। विभिन्न कला अकादमियों के युवा कलाकारों ने देशभक्ति व आध्यात्मिकता से परिपूर्ण प्रस्तुतियों से मन मोह लिया। जब गुजरात का गरबा नृत्य प्रस्तुत किया गया, तो हज़ारों की संख्या में उपस्थित दर्शक झूम उठे। अतिथियों को ढ़ोलक की थाप और बैंडबाजे के साथ सभा स्थल पर ले जाया गया। समारोह में पहुँचने से पहले दादियों ने केक काटा और ज्योति प्रज्वलित करके 5 मंजिला भवन का उद्घाटन किया।